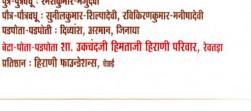


## श्री सम्मेतशिखरजी पड़ के लाभार्थी

पण्यसम्राट गुरुदेवश्री जयंतसेनसुरीश्वरजी म.सा. की कृपा से एवं मातुश्री गवरीदेवी उकचंदजी हिमताजी हिराणी के दिव्याशीष से पुत्र-पुत्रवधु ः रमेशकुमार-मंजुदेवी पौत्र-पौत्रवधु : सुनीलकुमार-शिल्पादेवी, रविकिरणकुमार-मनीषादेवी पडपोता-पडपोती : दिव्यांश, अरमान, जिनाया









अंजनशलाका किये हुए परमात्मा का जिन मंदिर में एक ही स्थान पर हमेशा के लिए स्थिरीकरण... चौंतीस अतिशयों से मनोज एवं पैंतीस गुणयुक्त वाणी से सुशोभित अरिहंत की भक्ति द्वारा... तन के आरोग्य का समीकरण मन की अशांति का दूरीकरण... धन-दौलत की लालसा का निराकरण परमात्मा की प्रतिखा सर्व विद्यां का नाश करती है... सर्वमंगलों का सर्जन करती है... सर्व दोषों का विसर्जन करती है अतः प्रभूजी की जिन मंदिर में प्रतिष्ठा भक्तों को अपूर्व परमानन्द अर्पण करती है... यदि प्रभु-प्रतिमा नीतियुक्त धन से निर्मित हो... यदि शासनप्रभावक निष्ठ सुरिदेव का सुयोग हो... यदि प्रतिष्ठा महोत्सव के आयोजकों एवं दानवीर उदार हो... यदि संघ के कार्यकर्ता नम् तथा सेवाभावी हो... तो तो तो इस धरती-तल पर स्वर्ग सुख का अवतरण होगा..





## श्री गिरनारजी पट्ट के लाभार्थी

मातुश्री पानीदेवी हस्तीमलजी दीपाजी वेदमुया के दिव्याशीष से शा. मदनलाल-संगीतादेवी, जयंतीलाल-विमलादेवी. भेरुलाल-मंजुलादेवी, गौतमकुमार-संगीतादेवी, विक्रम-अरुणा, निखिल-स्नेहा, गौरव-विनीशा, यश-पूजा, पर्व बेटा-पोता शा. हस्तीमलजी दीपाजी वेदम्या परिवार, रेवतड़ा प्रतिष्ठान : मास्टर ग्रुप, चेन्नई





## भगवान के भण्डार के लाभार्थी

पिताश्री मंगलचंदजी पाब्देवी कृन्दनमलजी हिराणी के दिव्याशीष से एवं मातुश्री फैंसीदेवी मंगलचंदजी के आशीर्वाद से पुत्र-पुत्रवधू : दिनेराक्मार-चंद्रादेवी, महावीरक्मार-मंज्देवी, गजराज-मीनादेवी पौत्र-पौत्रवधु : मोंटुकुमार-भव्या, रिषभकुमार-वैशाली, निलेश, ध्रवराज • पौत्री : अर्पिता, रिशिता, रिधिमा बेटा-पोता-पडपोता शा. मंगलचंदजी कुंदनमलजी हिराणी परिवार, रेवतड़ा प्रतिष्ठान : श्रीमती फैंसीदेवी मंगलचंदजी हिराणी, चेन्नई - मंबर्ड

